126 Sunnaten Aur Aadaab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 249
Weekly Booklet : 249

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब
"550 सुन्नतें और आदाब" की एक क़िस्त बनाम

126 सुन्नतें और आदाब

सफ़हात 20

सलाम की 11 सुन्नतें और आदाब 02
बातचीत करने की 12 सुन्नतें और आदाब 06
सोने, जागने की 15 सुन्नतें और आदाब 10
मिस्वाक की 22 सुन्नतें और आदाब 16

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **126 सुन्नतें और आदाब**
सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

126 सुन्नतें और आदाब

येह रिसाला (**126 सुन्नतें और आदाब**) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात.

MO. 98987 32611 • **Email :** hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़मून किताब "550 सुन्नतें और आदाब" के मुख़्तलिफ़ मक़ामात से लिया गया है।

126 सुन्नतें और आदाब

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

एक नौ जवान त़वाफ़े का'बा करते हुए सिर्फ़ दुरूद शरीफ़ ही पढ़ रहा था किसी ने उस से कहा : क्या तुझे कोई और दुआ़ए त़वाफ़ नहीं आती या कोई और बात है ? उस ने कहा : दुआ़एं तो आती हैं मगर बात येह है कि मैं और मेरे वालिद दोनों ह़ज के लिये निकले थे, वालिद साहिब रास्ते में बीमार हो कर फ़ौत हो (या'नी इन्तिक़ाल कर) गए, उन का चेहरा सियाह पड़ गया, आंखें उलट गईं और पेट फूल गया ! मैं बहुत रोया और कहा : اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ जब रात की तारीकी छा गई तो मेरी आंख लग गई, मैं सो गया तो मैं ने ख़्वाब में सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र ह़सीनो जमील हस्ती की ज़ियारत की। उन्हों ने मेरे वालिदे मर्ह़ूम की मय्यित के क़रीब तशरीफ़ ला कर अपना नूरानी हाथ उन के चेहरे और पेट पर फेरा, देखते ही देखते मेरे मर्ह़ूम बाप का चेहरा दूध से ज़ियादा सफ़ेद और रोशन हो गया और पेट भी अस्ली ह़ालत पर आ गया। जब वोह बुज़ुर्ग वापस जाने लगे तो मैं ने उन का दामने अक़्दस थाम लिया और अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! (या'नी ऐ मेरे सरदार !) आप

को उस की क़सम जिस ने आप को इस जंगल में मेरे वालिदे मर्हूम के लिये रह़मत बना कर भेजा है आप कौन हैं ? फ़रमाया तू हमें नहीं पहचानता ? हम तो मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, तेरा येह बाप बहुत गुनाहगार था मगर हम पर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ता था, जब इस पर येह मुसीबत नाज़िल हुई तो इस ने हम से फ़रियाद की लिहाज़ा हम ने इस की फ़रियाद रसी की है और हम हर उस शख़्स की फ़रियाद रसी करते हैं जो इस दुन्या में हम पर ज़ियादा दुरूद भेजता है। (روض الریاحین، ص125)

फ़रियाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

"اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से सलाम की 11 सुन्नतें और आदाब

﴾1﴿ मुसल्मान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे **सलाम** करना सुन्नत है। (इस्लामी बहनें भी इस्लामी बहनों नीज़ महारिम को सलाम करें) ﴾2﴿ "**सलाम** करते वक़्त दिल में येह **निय्यत** हो कि जिस को **सलाम** करने लगा हूं इस का माल और इ़ज़्ज़तो आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना **ह़राम** जानता हूं"[(1)] ﴾3﴿ दिन में कितनी ही बार आमना सामना हो, किसी कमरे वग़ैरा में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसल्मानों को **हर बार सलाम** करना कारे सवाब है ﴾4﴿ **सलाम** में पहल करना **सुन्नत** है ﴾5﴿ **सलाम** में पहल करने वाला **अल्लाह** करीम का मुक़र्रब (या'नी नज़्दीकी पाने वाला बन्दा) है ﴾6﴿ **सलाम** में पहल करने वाला तकब्बुर से भी बरी (या'नी

(1)... बहारे शरीअ़त, 3/459 बित्तसर्रुफ़

आज़ाद) है । जैसा कि मेरे मक्की मदनी आक़ा, प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले **सलाम** कहने वाला तकब्बुर से बरी है ।[1] ﴿7﴾ **सलाम** (में पहल) करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं[2] ﴿8﴾ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ (या'नी तुम पर सलामती हो) कहने से 10 नेकियां मिलती हैं । साथ में وَرَحْمَةُ اللهِ (और **अल्लाह** की रह़मत हो) भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी । और وَبَرَكَاتُهٗ (और उस की बरकतें हों) शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी । बा'ज़ लोग सलाम के साथ "जन्नतुल मक़ाम और दोज़ख़ुल ह़राम" के अल्फ़ाज़ बढ़ा देते हैं येह ग़लत़ त़रीक़ा है और येह जुम्ला लुग़तन भी ग़लत़ है । बल्कि बा'ज़ मनचले तो مَعَاذَ الله मज़ाक़न यहां तक बक देते हैं : "आप के बच्चे हमारे ग़ुलाम ।" **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 22 सफ़ह़ा 409 पर फ़रमाते हैं : कम अज़ कम اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ और इस से बेहतर وَرَحْمَةُ الله मिलाना और सब से बेहतर وَبَرَكَاتُهٗ शामिल करना और इस पर ज़ियादत (या'नी इज़ाफ़ा) नहीं । उस (या'नी सलाम करने वाले) ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहा तो येह (जवाब में) وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ الله कहे । और अगर उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ الله कहा तो येह وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहे और अगर उस ने وَبَرَكَاتُهٗ तक कहा **तो येह भी इतना ही कहे कि इस से ज़ियादत (या'नी इज़ाफ़ा) नहीं ।** ﴿9﴾ وَاللهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं ﴿10﴾ **सलाम** का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना **वाजिब** है कि **सलाम** करने वाला सुन ले

---

1 ... شعب الایمان، 6/433، حدیث: 8786 2 ... کیمیائے سعادت، 1/394

﴾11﴿ **सलाम** और जवाबे सलाम का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये। पहले मैं कहता हूं आप सुन कर दोहराइये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ अब पहले मैं जवाब सुनाता हूं फिर आप इस को दोहराइये : وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ

रिज़ाए ह़क़ के लिये तुम सलाम आ़म करो सलामती के त़लब गार हो सलाम करो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

"हाथ मिलाना सुन्नत है" के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से हाथ मिलाने की 14 सुन्नतें और आदाब

﴾1﴿ दो मुसल्मानों का ब वक़्ते मुलाक़ात दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा करना या'नी दोनों **हाथ मिलाना** सुन्नत है ﴾2﴿ हाथ मिलाने से पहले **सलाम** कीजिये ﴾3﴿ रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और (साथ में) हाथ भी मिला सकते हैं ﴾4﴿ रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हुए मुसाफ़ह़ा करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** पाक उन के दरमियान **सो रह़मतें** नाज़िल फ़रमाता है जिन में से **निनानवे रह़मतें** ज़ियादा पुर तपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं"[1] ﴾5﴿ हाथ मिलाने के दौरान **दुरूद शरीफ़** पढ़िये, हाथ जुदा होने से पहले اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ﴾6﴿ हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये : "يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ" (या'नी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) ﴾7﴿ दो मुसल्मान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ़ मांगेंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم **क़बूल** होगी और हाथ जुदा होने से पहले

1 ... معجم اوسط، 5/380، حدیث: 7672

पहले दोनों की मग़्फ़िरत हो जाएगी اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم ﴿8﴾ आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है ﴿9﴾ मुसल्मान को **सलाम** करने, **हाथ मिलाने** बल्कि महब्बत के साथ उस का **दीदार** करने से भी सवाब मिलता है। ह़दीसे पाक में है : जो कोई अपने मुसल्मान भाई की त़रफ़ महब्बत भरी नज़र से देखे और उस के दिल में अ़दावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे[1] ﴿10﴾ जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार हाथ मिला सकते हैं ﴿11﴾ आज कल बा'ज़ लोग दोनों त़रफ़ से एक हाथ मिलाते बल्कि सिर्फ़ उंग्लियां ही आपस में टकरा देते हैं येह सब ख़िलाफ़े सुन्नत है ﴿12﴾ हाथ मिलाने के बा'द ख़ुद अपना ही हाथ **चूम** लेना मक्रूह है।[2] हां अगर किसी बुज़ुर्ग से हाथ मिलाने के बा'द हुसूले बरकत के लिये अपना हाथ चूम लिया तो कराहत नहीं, जैसा कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर किसी से मुसाफ़ह़ा किया फिर बरकत के लिये अपना हाथ चूम लिया तो मुमानअ़त की कोई वज्ह नहीं जब कि जिस से हाथ मिलाए वोह उन हस्तियों में से हो जिन से बरकत ह़ासिल की जाती हो[3] ﴿13﴾ अगर **अम्रद** (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से (या किसी भी मर्द से) हाथ मिलाने में शह्वत आती हो तो उस से हाथ मिलाना जाइज़ नहीं बल्कि अगर देखने से शह्वत आती हो तो अब देखना भी गुनाह है[4] ﴿14﴾ **मुसाफ़ह़ा** करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये।[5]

1... معجم اوسط، 6/131، حدیث: 8251 2... बहारे शरीअ़त, 3/472 3... جد الممتار، 7/65
4... در مختار، 2/98 5... बहारे शरीअ़त, 3/471

''एक चुप हज़ार सुख'' के बारह हुरूफ़ की निस्बत से बातचीत करने की 12 सुन्नतें और आदाब

﴾1﴿ मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बातचीत कीजिये ﴾2﴿ मुसल्मानों की दिलजूई की निय्यत से छोटों के साथ शफ़्क़त भरा और बड़ों के साथ अदब वाला लहजा रखिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم सवाब भी मिलेगा और छोटे बड़े सब आप की इ़ज़्ज़त करेंगे ﴾3﴿ चिल्ला चिल्ला कर बात करना सुन्नत नहीं ﴾4﴿ अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ छोटे बच्चों से भी आप जनाब से गुफ़्तगू की आ़दत बनाइये, आप के अख़्लाक़ भी اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم उ़म्दा होंगे और बच्चे भी आदाब सीखेंगे ﴾5﴿ बातचीत करते वक़्त पर्दे की जगह हाथ लगाना, उंग्लियों के ज़रीए़ बदन का मैल छुड़ाना, दूसरों के सामने बार बार नाक को छूना या नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं, इस से दूसरों को घिन आती है ﴾6﴿ जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इ़त्मीनान से सुनिये। उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ कर देना सुन्नत नहीं ﴾7﴿ बातचीत करते हुए बल्कि किसी भी ह़ालत में क़हक़हा न लगाइये कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी क़हक़हा नहीं लगाया ﴾8﴿ ज़ियादा बातें करने और बार बार क़हक़हा लगाने या'नी ज़ोर ज़ोर से हंसने से हैबत जाती रहती है ﴾9﴿ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम किसी बन्दे को देखो कि उसे दुन्या से बे रग़बती और कम बोलने की ने'मत अ़त़ा की गई है तो उस की क़ुर्बतो सोह़बत इख़्तियार करो क्यूं कि उसे ह़िक्मत दी जाती है''[1] ﴾10﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : **''जो चुप रहा उस ने नजात पाई।''**[2] ''मिरआत शरीफ़'' में है : ह़ज़रते

1 ...ابن ماجہ، 4/422، حدیث: 4101 2 ...ترمذی، 4/225، حدیث: 2509

सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि गुफ़्तगू की चार क़िस्में हैं : (1) ख़ालिस मुज़िर (या'नी मुकम्मल तौ़र पर नुक़्सान देह) (2) ख़ालिस मुफ़ीद (3) मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) भी मुफ़ीद भी (4) न मुज़िर न मुफ़ीद। ख़ालिस मुज़िर (या'नी मुकम्मल नुक़्सान देह) से हमेशा परहेज़ ज़रूरी है, ख़ालिस मुफ़ीद कलाम (बात) ज़रूर कीजिये, जो कलाम मुज़िर भी हो मुफ़ीद भी उस के बोलने में एह़तियात़ करे, बेहतर है कि न बोले और चौथी क़िस्म के कलाम में वक़्त ज़ाएअ़ करना है। इन कलामों (या'नी चार क़िस्म की बातों) में इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) करना मुश्किल है लिहाज़ा ख़ामोशी बेहतर है[1] ﴾11﴿ किसी से जब बातचीत की जाए तो उस का कोई सह़ीह़ मक़्सद भी होना चाहिये और हमेशा मुख़ात़ब के मिज़ाज और उस की नफ़्सिय्यात के मुत़ाबिक़ बात की जाए ﴾12﴿ बद ज़बानी और बे ह़याई की बातों से हर वक़्त परहेज़ कीजिये, गाली गलोच से बचते रहिये और याद रखिये कि किसी मुसल्मान को बिला इजाज़ते शर्ई गाली देना ह़रामे क़त़ई है[2] और बे ह़याई की बात करने वाले पर जन्नत ह़राम है। हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस शख़्स पर जन्नत ह़राम है जो फ़ोह़्श गोई से काम लेता है।"[3] फ़ोह़्श बात के मा'ना येह है : اَلتَّعْبِيْرُ عَنِ الْاُمُوْرِ الْمُسْتَقْبَحَةِ بِالْعِبَارَاتِ الصَّرِيْحَةِ या'नी शर्मनाक उमूर (मसलन गन्दे और बुरे मुआ़मलात) का खुले अल्फ़ाज़ में तज़्किरा करना।[4]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

1... मिरआतुल मनाजीह़, 6/464 , मुलख़्ख़सन

2... फ़तावा रज़विय्या, 21/127, मुलख़्ख़सन

3... کتاب الصمت مع موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا 7/204، رقم:325 4... احیاء العلوم، 3/151

"اَلحَمدُ لِلّٰہِ رَبِّ العٰلَمِین" के सतरह हुरूफ़ की निस्बत से छींक के मुतअ़ल्लिक़ 17 सुन्नतें और आदाब

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ❰1❱ **अल्लाह** पाक को छींक पसन्द है और जमाही ना पसन्द[1] ❰2❱ जब किसी को छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहे तो फ़िरिश्ते कहते हैं : رَبِّ الْعٰلَمِیْن और अगर वोह رَبِّ الْعٰلَمِیْن कहता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : یَرْحَمُکَ اللہ या'नी **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म फ़रमाए[2] ❰3❱ छींक के वक़्त सर झुकाइये, मुंह छुपाइये और आवाज़ आहिस्ता निकालिये, छींक की आवाज़ बुलन्द करना **ह़माक़त** है[3] ❰4❱ छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहना चाहिये (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़ह़ा 3 पर त़ह़त़ावी के ह़वाले से छींक आने पर ह़म्दे इलाही को सुन्नते मुअक्कदा लिखा है[4]) बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن या اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे ❰5❱ सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन یَرْحَمُکَ اللہ (या'नी **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म फ़रमाए) कहे। और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला ख़ुद सुन ले।[5] ❰6❱ जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : "یَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ" (या'नी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे : "یَھْدِیْکُمُ اللّٰہُ وَیُصْلِحُ بَالَکُمْ" (या'नी **अल्लाह** पाक तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे)[6] ❰7❱ जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फेर लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللہُ الْکَرِیْم दांतों की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा[7] ❰8❱ ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल

1... بخاری، 4/163 حدیث:6226 2... معجم کبیر، 11/358، حدیث:12284 3... ردالمحتار، 9/684
4... حاشیۃ الطحطاوی علی المراقی، ص7 5... बहारे शरीअ़त, 3/476, 477 मुलख़्ख़सन
6... عالمگیری، 5/326 7... मिरआतुल मनाजीह़, 6/396

मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे तो वोह दाढ़ और कान के दर्द में कभी मुब्तला नहीं होगा[1] ﴿9﴾ छींकने वाले को चाहिये कि ज़ोर से ह़म्द कहे ताकि कोई सुने और जवाब दे[2] ﴿10﴾ छींक का जवाब एक मरतबा वाजिब है, दूसरी बार छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे तो दोबारा जवाब वाजिब नहीं बल्कि मुस्तह़ब है[3] ﴿11﴾ जवाब इस सूरत में वाजिब होगा जब छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे और ह़म्द न करे तो जवाब नहीं[4] ﴿12﴾ ख़ुत्बे के वक़्त किसी को छींक आई तो सुनने वाला उस को जवाब न दे[5] ﴿13﴾ कई इस्लामी भाई मौजूद हों तो बा'ज़ ह़ाज़िरीन ने जवाब दे दिया तो सब की त़रफ़ से जवाब हो गया मगर बेहतर येही है कि सारे जवाब दें[6] ﴿14﴾ दीवार के पीछे किसी को छींक आई और उस ने اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा तो सुनने वाला उस का जवाब दे[7] ﴿15﴾ नमाज़ में छींक आए तो सुकूत करे (या'नी ख़ामोश रहे) और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कह लिया तो भी नमाज़ में ह़रज नहीं और अगर उस वक़्त ह़म्द न की तो फ़ारिग़ हो कर कहे[8] ﴿16﴾ आप नमाज़ पढ़ रहे हैं और किसी को छींक आई और आप ने जवाब की निय्यत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा तो आप की नमाज़ टूट गई[9] ﴿17﴾ काफ़िर को छींक आई और उस ने اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा तो जवाब में یَھْدِیْکُمُ اللّٰہُ (या'नी **अल्लाह** पाक तुझे हिदायत करे) कहा जाए।[10]

---

1 ...مرقاۃ المفاتیح، 8/499 تحت الحدیث: 4739 2 ...ردالمحتار، 9/684

3 ... عالمگیری، 5/326, بہارِ شریعت, 3/476 4 ... بہارِ شریعت, 3/477

5 ...فتاوی قاضی خان، 2/377 6 ...ردالمحتار، 9/684 7 ...ردالمحتار، 9/684

8 ...عالمگیری، 1/98 9 ...عالمگیری، 1/98 10 ...ردالمحتار، 9/684

“काश ! जन्नतुल बक़ीअ़ मिले” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से सोने, जागने की 15 सुन्नतें और आदाब

﴾1﴿ सोने से पहले बिस्तर को अच्छी त़रह़ झाड़ लीजिये ताकि कोई मूज़ी कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाए ﴾2﴿ सोने से पहले येह दुआ़ पढ़ लीजिये : اَللّٰھُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं)[1] ﴾3﴿ **अ़स्र के बा'द न सोएं, अ़क़्ल चली जाने का ख़ौफ़ है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : “जो शख़्स अ़स्र के बा'द सोए और उस की अ़क़्ल जाती रहे तो वोह अपने ही को मलामत करे”[2] ﴾4﴿ दो पहर को क़ैलूला (या'नी कुछ देर लैटना) मुस्तह़ब है[3] ﴾5﴿ दिन के इब्तिदाई ह़िस्से में सोना या मग़रिब व इ़शा के दरमियान में सोना मकरूह है।[4] ﴾6﴿ सोने में मुस्तह़ब येह है कि बा त़हारत सोए और ﴾7﴿ कुछ देर सीधी करवट पर सीधे हाथ को रुख़्सार (या'नी गाल) के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाईं करवट पर[5] ﴾8﴿ सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहां तन्हा सोना होगा सिवा अपने आ'माल के कोई साथ न होगा ﴾9﴿ सोते वक़्त यादे ख़ुदा में मश्ग़ूल हो तहलील व तस्बीह़ व तह़मीद पढ़े ﴾या'नी لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله, سُبْحٰنَ الله, और اَلْحَمْدُ لِلّٰه का विर्द करता रहे﴿ यहां तक कि सो जाए, कि जिस ह़ालत पर इन्सान सोता है उसी पर उठता है और जिस ह़ालत पर मरता है क़ियामत के दिन उसी पर उठेगा[6] ﴾10﴿ **जागने के बा'द येह दुआ़ पढ़िये :** “اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَحْیَانَا بَعْدَ مَاۤ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ”[7]

---

1 ... بخاری، 4/196، حدیث: 6325
2 ... مسند ابو یعلی، 4/278، حدیث: 4897
3 ... عالمگیری، 5/376, बहारे शरीअ़त, 3/435
4 ... عالمگیری، 5/376
5 ... عالمگیری، 5/376
6 ... عالمگیری، 5/376
7 ... بخاری، 4/196، حدیث: 6325

तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है ﴾11﴿ उसी वक़्त इस का पक्का इरादा करे कि परहेज़ गारी व तक़्वा करेगा किसी को सताएगा नहीं[1] ﴾12﴿ जब लड़के और लड़की की उ़म्र दस साल की हो जाए तो उन को अलग अलग सुलाना चाहिये बल्कि इस उ़म्र का लड़का इतने बड़े (या'नी अपनी उ़म्र के) लड़कों या (अपने से बड़े) मर्दों के साथ भी न सोए[2] ﴾13﴿ मियां बीवी जब एक चारपाई पर सोएं तो दस बरस के बच्चे को अपने साथ न सुलाएं, लड़का जब ह़द्दे शह्‌वत को पहुंच जाए तो वोह मर्द के हुक्म में है[3] ﴾14﴿ नींद से बेदार हो कर मिस्वाक कीजिये ﴾15﴿ रात में नींद से बेदार हो कर तहज्जुद अदा कीजिये तो बड़ी सआ़दत है । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** "फ़र्ज़ों के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है ।"[4]

"या रब्बल मुस्त़फ़ा मक्का व मदीना की ज़ियारत नसीब फ़रमा" के पैंतीस हुरूफ़ की निस्बत से सफ़र की 35 सुन्नतें और आदाब

﴾1﴿ **शरअ़न** मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो तीन दिन के फ़ासिले तक जाने के इरादे से अपने मक़ामे इक़ामत मसलन शहर या गाउं से बाहर हो गया । खुश्की में सफ़र पर तीन दिन की मसाफ़त से मुराद साढ़े सत्तावन मील (या'नी तक़रीबन 92 किलो मीटर) का फ़ासिला है[5] ﴾2﴿ शरई सफ़र करने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह सफ़र में पेश आने वाले मसाइल सीख चुका हो । (मक्तबतुल मदीना का रिसाला "मुसाफ़िर की नमाज़" का

---

1 ... عالمگیری، 5/375 2 ... در مختار ورد المحتار، 9/629 3 ... در مختار، 9/630
4 ... مسلم، ص591، حدیث:1163 5 ... फ़तावा रज़विय्या, 8/270, 243

मुत़ालआ़ मुफ़ीद है) **3** "बुख़ारी शरीफ़" में है : "रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के लिये जुमे'रात के दिन रवाना हुए और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जुमे'रात के दिन रवाना होना पसन्द फ़रमाते थे"[(1)] **4** जब सफ़र करना हो तो बेहतर येह है कि पीर, जुमे'रात या हफ़्ते को करे[(2)] **5** सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जुबैर बिन मुत़इम رَضِىَ اللهُ عَنْه को सफ़र में अपने साथियों से ज़ियादा ख़ुशह़ाल रहने के लिये येह विर्द पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाई : **(1) सूरतुल काफ़िरून (2) सूरतुन्नस्र (3) सूरतुल इख़्लास (4) सूरतुल फ़लक़ (5) सूरतुन्नास** । हर सूरत एक एक बार और हर एक की इब्तिदा में بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ और सब से आख़िर में भी एक बार बिस्मिल्लाह पूरी पढ़ लीजिये, (इस त़रह़ सूरतें पांच होंगी और बिस्मिल्लाह शरीफ़ छे बार) ह़ज़रते जुबैर बिन मुत़इम رَضِىَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं यूं तो साह़िबे माल था मगर जब सफ़र करता तो साथियों से ख़ुशह़ाली में कम हो जाता, बयान की हुई सूरतें हमेशा पढ़नी शुरूअ़ कीं, इन की बरकत से वापसी तक ख़ुशह़ाल और दौलत मन्द रहता[(3)] **6** चलते वक़्त सब अ़ज़ीज़ों दोस्तों से मिले और अपने क़ुसूर मुआ़फ़ कराए और अब उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआ़फ़ कर दें[(4)] **7** लिबासे सफ़र पहन कर घर में चार रक्अ़त नफ़्ल अलह़म्द व क़ुल (هُوَالله की पूरी सूरह) से पढ़ कर बाहर निकले । वोह रक्अ़तें वापस आने तक उस के अहलो माल की निगह्बानी करेंगी[(5)] **8** दो रक्अ़त भी पढ़ी जा सकती हैं, ह़दीसे पाक में है : "किसी ने अपने अह्ल के पास उन

1... بخاری،2/296،حدیث:2950

2... फ़तावा रज़विय्या मुलख़्ख़सन, 23/400

3... ابویعلی،6/265،حدیث:7382ملخصا

4... बहारे शरीअ़त, 1/1052

5... बहारे शरीअ़त, 1/1052

दो रक्अ़तों से बेहतर न छोड़ा, जो ब वक़्ते इरादए सफ़र उन के पास पढ़ीं''[1] ﴾9﴿ सफ़र में तीन या इस से ज़ियादा इस्लामी भाई हों तो एक को ''अमीर'' बना लें कि सुन्नत है। जैसा कि ह़दीसे पाक में है : ''जब सफ़र में तीन शख़्स हों तो एक को अपना **अमीर** बना लें''[2] ﴾10﴿ इस (या'नी अमीर बनाने) में कामों का इन्तिज़ाम रहता है, सरदार (या'नी अमीर) उसे बनाएं जो ख़ुश ख़ुल्क़ (या'नी बा अख़्लाक़) आ़क़िल (या'नी अ़क़्ल मन्द) दीनदार हो, सरदार (या'नी अमीर) को चाहिये कि रफ़ीक़ों (या'नी साथियों) के आराम को अपनी आसाइश (या'नी आराम) पर मुक़द्दम रखे (या'नी अपने आराम के बजाए साथियों के आराम को ज़ियादा अहम्मिय्यत दे[3]) ﴾11﴿ आईना, सुरमा, कंघा, मिस्वाक साथ रखे कि सुन्नत है[4] ﴾12﴿ वालिदे आ'ला ह़ज़रत, मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : वोह जनाब (या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) सफ़र में **(1) मिस्वाक** और **(2)** सुरमा दान और **(3)** आईना और **(4)** शाना (या'नी कंघा) और **(5)** क़ैंची और **(6)** सूई **(7)** धागा अपने साथ रखते।[5] एक दूसरी रिवायत में **(8)** ''तेल'' के अल्फ़ाज़ (भी) नक़्ल हुए हैं[6] ﴾13﴿ ज़िक्रुल्लाह से दिल बहलाए कि फ़िरिश्ता साथ रहेगा, न कि (बुरे) शे'रो लग़्वियात (या'नी बेहूदा बातों) से कि शैत़ान साथ होगा[7] ﴾14﴿ अगर दुश्मन या डाकू का ख़ौफ़ हो तो सूरए ''لِاِیْلٰف'' (पूरी सूरह) पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم हर बला से अमान मिलेगी। येह अ़मल मुजर्रब

---

1 ... مصنف ابن ابی شیبۃ، 1/529

2 ... ابوداؤد، 3/51، حدیث: 2609

3 ... बहारे शरीअ़त, 1/1051, 1052

4 ... बहारे शरीअ़त, 1/1051,1052

5 ... अन्वारे जमालेे मुस्त़फ़ा, स. 160

6 ... سبل الہدی، 7/347

7 ... फ़तावा रज़विय्या, 10/729

है(1) ❰15❱ सफ़र हो या हज़र (या'नी क़ियाम) जब भी किसी ग़म या परेशानी का सामना हो حَسْبُنَا اللّٰہُ وَ نِعْمَ الْوَکِیْل और لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ[1] ब कसरत पढ़िये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم मुश्किल आसान होगी ❰16❱ सफ़र के दौरान चढ़ाई पर चढ़ते हुए "اَللّٰہُ اَکْبَر" और ढलवान से उतरते हुए سُبْحٰنَ اللّٰہ का विर्द कीजिये ❰17❱ अगर कोई शख़्स सफ़र पर जा रहा हो तो उस (मुसाफ़िर) से मुसाफ़हा करे या'नी हाथ मिलाए और उस के लिये येह दुआ मांगे : اَسْتَوْدِعُ اللّٰہَ دِیْنَكَ، وَاَمَانَتَكَ، وَخَوَاتِیْمَ عَمَلِكَ۔[2] (2) ❰18❱ मुक़ीम (या'नी जो मुसाफ़िर न हो उस) के लिये मुसाफ़िर येह दुआ पढ़े : اَسْتَوْدِعُكَ اللّٰہَ الَّذِیْ لَا یُضِیْعُ وَدَائِعَہٗ۔[3] (3) ❰19❱ मन्ज़िल पर (या'नी रास्ते में जहां भी रुकना पड़े वहां) उतरते वक़्त येह पढ़िये : اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّامَّاتِ، مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ۔[4] (4) اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم **हर नुक़्सान से बचेगा**(5) ❰20❱ मुसाफ़िर की दुआ क़बूल होती है, लिहाज़ा अपने लिये, अपने वालिदैन, बाल बच्चों और आम मुसल्मानों के लिये दुआएं कीजिये ❰21❱ सफ़र में कोई शख़्स बीमार हो गया या बेहोश हो गया तो उस के साथ वाले उस मरीज़ की ज़रूरिय्यात में उस का माल बिग़ैर इजाज़त ख़र्च कर सकते हैं(6) ❰22❱ **मुसाफ़िर** पर वाजिब है कि नमाज़

---

❶...الحصن الحصین ص79،80

❷...الحصن الحصین، ص80،79

❸...ابن ماجہ، 3/372، حدیث:2825

❹...التیسیر، 1/228

❺...الحصن الحصین، ص82

❻... ردالمحتار، 9/335،334, बहारे शरीअत, 3/222

1 : **तरजमा :** गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत **अल्लाह** ही की तरफ़ से है। 2 : **तरजमा :** मैं तेरे दीन, तेरी अमानत और तेरे अमल के ख़ातिमे को **अल्लाह** पाक के सिपुर्द करता हूं। 3 : **तरजमा :** मैं तुम्हें **अल्लाह** पाक के सिपुर्द करता हूं जो सौंपी हुई अमानतों को ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाता। 4 : **तरजमा :** मैं **अल्लाह** पाक के कामिल कलिमात (या'नी जिस में कोई नक़्स या ऐब न हो) के वासिते से सारी मख़्लूक़ के शर से पनाह मांगता हूं।

में क़स्र करे या'नी चार रक्अ़त वाले फ़र्ज़ को दो पढ़े इस के हक़ में दो ही रक्अ़तें पूरी नमाज़ है[1] ﴾23﴿ मग़रिब और वित्र में क़स्र नहीं ﴾24﴿ **सुन्नतों** में क़स्र नहीं बल्कि पूरी पढ़ी जाएंगी, ख़ौफ़ और रवा रवी (या'नी घबराहट) की हालत में सुन्नतें मुआ़फ़ हैं और अम्न की हालत में पढ़ी जाएंगी[2] ﴾25﴿ कोशिश कर के हवाई जहाज़ या रेल या बस वग़ैरा में ऐसे वक़्त सफ़र कीजिये कि बीच में कोई नमाज़ न आए ﴾26﴿ सफ़र में भी सोने के अवक़ात में हरगिज़ ऐसी ग़फ़्लत न हो कि مَعَاذَاللہ नमाज़ क़ज़ा हो जाए ﴾27﴿ दौराने सफ़र भी नमाज़ में हरगिज़ कोताही न हो, ख़ुसूसन हवाई जहाज़, रेलगाड़ी और लम्बे रूट की बस में नमाज़ के लिये पहले ही से वुज़ू तय्यार रखिये ﴾28﴿ रास्ते में बस ख़राब हो जाए तो ड्राइवर या मालिकाने बस वग़ैरा को कोसने और बक बक कर के अपनी आख़िरत दाव पर लगाने के बजाए **सब्र** से काम लीजिये और जन्नत की त़लब में ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हो जाइये। येही ट्रेन या फ़्लाइट लेट होने की सूरत में कीजिये ﴾29﴿ रेल, बस वग़ैरा में दीगर मुसाफ़िरों के हक़्क़े पड़ोस का ख़याल रखते हुए उन के साथ ख़ूब हुस्ने सुलूक कीजिये, बेशक ख़ुद तक्लीफ़ उठा लीजिये मगर उन को राह़त पहुंचाइये ﴾30﴿ बस वग़ैरा में चिल्ला कर बातें कर के और ज़ोर से क़ह्क़हे लगा कर दूसरे मुसाफ़िरों को अपने आप से बदज़न मत कीजिये ﴾31﴿ भीड़ के मौक़अ़ पर किसी ज़ईफ़ व मरीज़ मुसल्मान को देखें तो ब निय्यते सवाब उस को बस वग़ैरा में ब इसरार अपनी निशस्त (Seat) पेश कर दीजिये ﴾32﴿ ह़त्तल इम्कान फ़िल्मों और गाने बाजों से पाक बस और वेगन वग़ैरा में सफ़र कीजिये

1... बहारे शरीअ़त, 1/743, 139/1 عالمگیری

2... عالمگیری، 139/1

﴾33﴿ सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोहफ़ा लेते आइये कि **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए"[1] ﴾34﴿ शरई सफ़र से वापसी में मक्रूह वक़्त न हो तो सब से पहले अपनी मस्जिद में और जब घर पहुंचे तो घर पर भी दो रक्अत नफ़्ल पढ़िये ﴾35﴿ मुसाफ़िर की दुआ क़बूल होती है।[2]

"मिस्वाक सरकारे मदीना की सुन्नत है" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक की 22 सुन्नतें और आदाब

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴾1﴿ दो रक्अत मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की 70 रक्अतों से अफ़्ज़ल है[3] ﴾2﴿ मिस्वाक का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूं कि इस में मुंह की सफ़ाई और रब की रिज़ा का सबब है[4] ﴾3﴿ हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर रात कई बार मिस्वाक करते थे, हर बार सोते वक़्त भी और बेदार होते वक़्त भी।[5] ﴾4﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के मिस्वाक करने से तबई फ़वाइद हासिल होंगे मगर सवाब नहीं मिलेगा। मसलन वुज़ू के लिये मिस्वाक करना हो तो यूं तीन निय्यतें कर लीजिये : रिज़ाए इलाही, सुन्नत की अदाएगी और ज़िक्रो दुरूद के लिये मुंह को पाकीज़ा करने की ग़रज़ से मिस्वाक करूंगा ﴾5﴿ मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : जो शख़्स **मिस्वाक** का आ़दी हो मरते वक़्त उसे कलिमा पढ़ना नसीब होगा और जो **अफ़्यून** खाता हो मरते वक़्त उसे कलिमा नसीब न होगा[6] ﴾6﴿ हज़रते **अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस ख़ूबियां हैं :

1 ...ابن عساکر، 52/230 2 ...ترمذی، 5/280، حدیث: 3459 3 ...الترغیب والترہیب، 1/102، حدیث: 18
4 ...مسند امام احمد، 2/438، حدیث: 8569 5 ...احیاء العلوم، 1/1019 6 ... बहारे शरीअ़त, 1/288

मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत बनाती है, नज़र तेज़ करती, बलग़म (कफ़, PHLEGM) दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मे'दा दुरुस्त करती है[1] ﴾7﴿ **हिकायत :** हज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिबली** बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को एक मरतबा वुज़ू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने की अश्रफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई । बा'ज़ लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी **मिस्वाक** ली जाती है ? फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाह** पाक के नज़्दीक मच्छर के पर बराबर भी हैसिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक ने मुझ से येह पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा कि "तू ने मेरे प्यारे हबीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? जो मालो दौलत मैं ने तुझे दिया था उस की हक़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो आख़िर ऐसी हक़ीर दौलत इस अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) को हासिल करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ?"[2] ﴾8﴿ सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : चार चीज़ें अ़क़्ल बढ़ाती हैं : फ़ुज़ूल बातों से बचना, **मिस्वाक** करना, नेक लोगों की सोहबत और अपने इल्म पर अ़मल करना[3] ﴾9﴿ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ﴾10﴿ मिस्वाक की मोटाई छुंगल्या या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ﴾11﴿ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैतान बैठता है ﴾12﴿ इस

1 ...جمع الجوامع، 5/249، حدیث: 14867 2 ...لواقح الانوار ملخصا، ص38 3 ...حیاۃ الحیوان، 2/166

के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइस बनते हैं ﴾13﴿ मिस्वाक ताज़ा हो तो बेहतर वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ﴾14﴿ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये ﴾15﴿ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ﴾16﴿ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ﴾17﴿ हर बार धो लीजिये ﴾18﴿ मिस्वाक सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की तीन उंग्लियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ﴾19﴿ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ﴾20﴿ मुठ्ठी बांध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ﴾21﴿ मिस्वाक वुज़ू के अन्दर शामिल नहीं येह वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया (या'नी वुज़ू से पहले की सुन्नत) है अलबत्ता सुन्नते मुअक्कदा उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो[1] ﴾22﴿ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह सुन्नत अदा करने का आला है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये।

फ़ेहरिस

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत.....1
सलाम की 11 सुन्नतें और आदाब.....2
हाथ मिलाने की 14 सुन्नतें और आदाब.....4
बातचीत करने की 12 सुन्नतें और आदाब..6
छींक के मुतअ़ल्लिक़ 17 सुन्नतें और आदाब.8
सोने, जागने की 15 सुन्नतें और आदाब...10
सफ़र की 35 सुन्नतें और आदाब....11
मिस्वाक की 22 सुन्नतें और आदाब.....16

1... फ़तावा रज़विय्या माख़ूज़न, 1/623

सुन्नत ज़िन्दा करने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मेरी किसी ऐसी सुन्नत को ज़िन्दा किया जो मेरे बा'द मिट चुकी थी तो उसे उन तमाम लोगों के बराबर सवाब मिलेगा जो उस सुन्नत पर अमल करेंगे और उन अमल करने वालों के सवाब में भी कमी न होगी। (ترمذی، 4/309، حدیث:2686)